दिनांक : 22 जनवरी, 2014

विफल कांग्रेस, अराजक एएपी और अस्तित्वहीन तीसरे मोर्चे का प्रभाव

- अरुण जेटली
नेता प्रतिपक्ष राज्यसभा

पिछले कुछ दिनों की घटनाओं ने देश के उभरते राजनीतिक परिदृश्य की सुस्पष्ट और गहरी तस्वीर पेश कर दी। भाजपा को जो संभावनाएं दिख रही हैं, वह प्रोत्साहित करने वाली हैं।

कांग्रेस पार्टी आजादी के भारत की राजनीति पर हावी रही है। पिछले कुछ वर्षों में सत्तारूढ़ यूपीए गठबंधन का प्रदर्शन कमजोर और प्रेरणाविहीन रहा। सभी चुनावों से संकेत मिला कि 2014 के आम चुनावों को देखते हए लोकप्रियता में उसके नेता नरेन्द्र मोदी से काफी पीछे हैं। लगता है कि अधिकतर राज्यों में कांग्रेस अपनी ताकत खो देगी। ऐसा शायद ही कोई राज्य है, जहां वह 2009 का आंकड़ा पार करेगी। जैसे–जैसे चुनाव नजदीक आ रहे हैं, भाजपा के पख में हवा बन रही है, जिसमें और तेजी आएगी। साथ ही जो इलाके भाजपा के गढ़ नहीं हैं, वहां भाजपाके मतों में पर्याप्त वृद्धि हुई है। तमिलनाडु, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल और आंध्र प्रदेश जैसे राज्य जहां पार्टी की ताकत सीमित थी, वहां किये गए सर्वेक्षणों में भाजपा मतों में काफी वृद्धि हुई है। नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री बनाने की आवाज और जोर पकड़ेगी और वोट और बढ़ेंगे।

भाजपा के परम्परागत आलोचक पहले कांग्रेस पार्टी के पीछे मंडरा रहे थे। ऐसा लगता है कि जैसे वे उम्मीद खो चुके हैं कि अब कुछ भी भाजपा या मोदी को नहीं रोक पाएगा। कुछ समय के लिए उन्हें लगा था कि भाजपा की रफ्तार को एएपी रोक देगी। आम आदमी पार्टी ने उस पुरानी कहावत की याद दिला दी कि राजनीति में एक सप्ताह काफी लम्बा समय है।

उसने अस्वीकार्य और गैर–जिम्मेदाराना प्रदर्शन किया है। एक एसएचओ का तबादला नहीं करने के कारण ये पार्टी गणतंत्र दिवस समारोह में बाधा पहुंचाने को तैयार थी। कांग्रेस पार्टी परेशान है कि एएपी से कैसे निपटे। वह आलोचना करने को तो तैयार है, लेकिन कार्रवाई करने को नहीं। उसने एक सप्ताह की मोहलत दे दी, जिसे एएपी ने स्वीकार कर लिया। एएपी का गैर–जिम्मेदाराना व्यवहार और कांग्रेस पार्टी का आत्मसमर्पण ऐसी पार्टी की जरूरत बढ़ाएगा, जो स्थायी सरकार प्रदान कर सके।

वर्तमान रूझान संकेत हैं कि अगले लोकसभा चुनाव में केवल एक पार्टी होगी, जिसके पास तिहाई का आंकड़ा होगा। सबसे आगे रहने वाली और अगली पार्टी के बीच महत्वपूर्ण अंतर होगा। बाकी दलों के पास थोड़ी–सी सीटें होंगी। तब सरकार कौन बताएगा ? यह एक ऐसा सवाल है, जिसका जवाब मतदाताओं की पसंद तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

क्या भारत एक ऐसी सरकार झेल सकता है, जिसका हृदय बहत छोटा हो और जिसमें अनगिनत पृथक समूह हों ? इसका जवाब है कि भारत जिम्मेदार शासन, राजनीतिक स्थिरता और जानदार आर्थिक विकास चाहता है। वह निवेश चक्र को फिर से जीवित करना चाहता है। विफल कांग्रेस, अराजक एएपी और अस्तित्वहीन तीसरा मोर्चा भाजपा और मोदी को आगे बढ़ाने में योगदान देगा।

★★★★★